ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भगों देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

प्रबुद्ध जीवन

प्रेरणास्रोतः शांतिकुंज हरिद्वार संस्थापनाः गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा (बिहार)

सम्प्रेषक- डॉ. अरुण कुमार जायसवाल वर्षः ०३ अंकः ०४

'बुरे विचारों को कैसे पहचानें?

मनुष्य का न सिर्फ आन्तरिक जीवन वरन् उसके समस्त जीवन के व्यवहार तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी मन की कृष्ट तथा अकृष्ट गतियों का परिणाम मात्र है। अशुभ विचारों को लाना ही अपने जीवन को दुःखी बनाना है, तथा शुभ विचारों को लाना सुखी बनाना है। अब प्रश्न यह आता है कि हम अशुभ विचारों को आने से कैसे रोकें जिससे कि उनसे पैदा किये दुःखों से हम बच सकें? यह प्रश्न बड़े महत्व का है और संसार के समस्त मनस्वी लोगों ने इस प्रश्न पर गम्भीर विचार किया है। प्रत्येक मनुष्य को इस विषय पर विचार करना चाहिये। बुरे विचारों के निरोध का उपाय सबसे प्रथम उनको पहचानना ही है।

किसी भी ऐसे विचार को बुरा विचार कहना चाहिये जो आत्मा को दुःख देता हो, उसको भ्रम में डालता हो। बीमारी के विचारों और असफलता के विचारों को सभी बुरा कहेंगे- यह प्रत्यक्ष ही है कि इन विचारों से मन को दुख होता है और अनहोनी घटना होके रहती है। किन्तु इस बात को मानने के लिये कम लोग तैयार होंगे कि शत्रुता के विचार, दूसरों को क्षति पहुँचाने के विचार भी बुरे विचार हैं। ये विचार भी उसी प्रकार हमारी आत्मा का बल कम कर देते हैं जिस प्रकार कि असफलता और बीमारी के विचार आत्मा का बल कम कर देते हैं।

ऐसे कई बुरे विचार होंगे जिनको हम उत्तम विचार मानते हों तो ऐसी स्थिति में उसे अपने मन में आने से रोकने की जगह भली प्रकार से उसका स्वागत करेंगे। इसका निर्णय इस विवेक के आधार पर किया जाता है कि वास्तव में ऐसे बुरे विचार प्रथम दृष्टि में सतही तौर पर बुरे नहीं प्रतीत होते परंतु उनके परिणाम बुरे होते हैं। विचारवान व्यक्ति ही इस बात को जान सकता है कि अमुक विचार अन्त में दुःखदायी होगा।

हृदय से हृदय तक

प्रत्येक कार्तिक अमावस्या की घोर अंधकारमय रात्रि को आयोजित होने वाला दीपावली का पर्व महालक्ष्मी के आह्वान के साथ ही मानव के द्वारा अज्ञान और अंधकार के पराजय एवं पराभव का पर्व है। इस दिन दीपों का प्रकाश कर हम दीप प्रज्वलन की पुरातन परम्परा को गतिमान बनाते हैं तथा दीप्ति रूप प्रकाश के सतोगुणी स्वरूप से आत्मा का साक्षात्कार कराते हैं। दीपदान की प्रथा समस्त विश्व में पुरातन काल से विद्यमान रही है। पहले वनस्पति पूजा की शुरुआत हुई। तत्पश्चात् ज्योतिर्मय परमात्मा की पूजा के साथ प्रदीप की तेजोमय आभा एकीभूत हो गयी। शास्त्रों की उक्ति है– 'दीपोज्योतिः नमस्तुभ्यं दीपज्योतिः जनार्दन ।। दीप हमारी आस्था के सबसे सनातन प्रमाण है। महाकवि अश्वघोष ने सौन्दरानंद में मोक्ष की उपमा दीपक की निर्वाण दशा से दी है। कालजयी महाकवि कालिदास प्रदीप्त दीपों की कतारों को देखकर कह उठते हैं– प्रवर्तिनों दीप इव प्रदीपात्।

दीपावली का धार्मिक पर्व के रूप में सर्वप्रथम सम्यक् विवेचन भविष्य पुराण में मिलता है। मात्र लौकिक मान्यताओं, वैभव एवं प्रदर्शन से पृथक् पद्मपुराण ने इस पर्व को शालीन एवं सुसंस्कारित आवरण पहनाकर धार्मिकता एवं सात्विकता से ज्योतिमण्डित किया है। अन्य साहित्य धाराओं में दीपावली का लौकिक परिदृश्य प्रकट होता है। गुह्यसूत्रों के अनुसार चन्द्र संवत्सर नववर्ष के प्रारंभ होने के कारण दीप पर्व पर सफाई आदि की जाती थी। बुद्धघोष का राजगृह इसी महापर्व पर सजता था और धम्मपद अल्प कथा के अनुसार कौमुदी महोत्सव का आयोजन इसी शुभ पर्व पर रात्रि भर चलता था।

माता लक्ष्मी का वर्णन वैदिक पुरुषसूक्त से लेकर पुराणों तक परमेश्वर की ऐश्वर्यशक्ति के रूप में प्रकाशित होता है। इस सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि स्थूल दृष्टि से देखने पर लक्ष्मी केवल बाहरी वस्तु प्रतीत होती है, जबकि वे वस्तुतः आत्मविभूति हैं जो बीज रूप में सारे प्राणियों के अन्दर विद्यमान हैं। जो अपनी आत्मज्योति को प्रकाशित कर पाता है, वही उनके इस यथार्थ रूप से लाभान्वित होता है। महर्षि मार्कण्डेय भी इसे कोई बाह्य वस्तु न बताकर आन्तरिक तत्त्व की संज्ञा देते हैं। मानव के आभ्यन्तर में जो सार्वभौम शक्ति विद्यमान है, वही बाह्य सम्पत्ति का का अर्जन-विसर्जन करती रहती है। तभी तो माता लक्ष्मी कमल पर आसीन हैं। कमल विवेक का प्रतीक है; पंक से उत्पन्न होकर भी पंकरहित स्वच्छ, पावन, सुगन्धित। यथार्थ भी यही है कि सम्पत्ति तभी वरेण्य है जब वह पवित्रता पर आधारित हो।

दीप पर्व के अनुष्ठान की सार्थकता तभी है जबकि हमारे अन्दर ज्ञान और प्रेम की ज्योति जल उठे। इस ज्योति का प्रकाश ही बाह्य जीवन को विभूति और वैभव से सम्पन्न और सक्षम बनाने में समर्थ है। इस पावन बेला में दीपों की पंक्तियाँ कुछ इस तरह से जगमगाएँ कि विश्व में सद्बुद्धि की उजास बढ़े। सद्बुद्धि का यह उजाला ही समृद्धि को सुरक्षित और विकसित करने का आधार है। सद्ज्ञान और सद्बुद्धि के साथ समृद्धि का समन्वय ही इस पर्व की प्रेरणा है। यह प्रेरणा माता लक्ष्मी की कृपा से आपके जीवन में चरितार्थ हो और आपकी दीपावली सार्थकता को प्राप्त हो, ऐसी प्रेमपूर्ण मंगल कामनाएं।

– डॉ. अरुण कुमार जायसवाल

दुर्गातत्त्व

देवीपुराण में वर्णित है कि दुर्गा पराप्रकृति हैं, शिव की पटरानी हैं, देवताओं के सम्मिलित तेज से उत्पन्न हैं, महामाया हैं, महिषासुरमर्दिनी हैं । इनके हजारों नाम हैं । नाम से ही स्पष्ट है दुर्गा, यानि संसार रूपी दुर्ग से संबंधित वह शक्ति जो इस दुर्ग को बना भी सकती हैं और मिटा भी सकती हैं, जो दुर्ग का पालन भी करती हैं और जो दुर्ग की रक्षा भी करती हैं जो इस दुर्ग में वास भी करती हैं । अगर हमें इस दुर्ग का परिचय पाना है तो दुर्गातत्त्व को समझना होगा ।

एक प्रश्न उठता है कि यह दुर्ग है क्या ? कहाँ है यह दुर्ग ? तो यह दुर्ग दो प्रकार का है एक बाहरी और एक आंतरिक । बाहरी तौर पर अगर आकलन किया जाए तो यह दुर्ग संसार है, सृष्टि है और आंतरिक तौर पर देखा जाए तो वह दुर्ग अपने मन की सृष्टि है, यानि उसके शुभ - अशुभ विचारों से की गई कल्पना से बना विचारों का एक ऐसा किला है जिसमें जीव वास करता है । सभी का मन अपने - अपने संस्कारों और अपनी -अपनी चित्तवृत्तियों के अनुसार एक - एक दुर्ग बनाता है । कोई अज्ञानता से प्रेरित होकर दुर्ग बनाता है तो कोई ज्ञान की अभिलाषा से भी दुर्ग बनाता है पर हर मन अपने - अपने दुर्ग को बनाता है और वह उसी दुर्ग में रहना पसन्द करता है । कोई साधारण शक्ति उसे उस दुर्ग से हिला भी नहीं सकती । चाहे किसी के मन का दुर्ग प्रेम, सेवा, त्याग और परोपकार आदि से बनाया गया हो चाहे ईर्ष्या - विद्वेष, घृणा - नफरत आदि से बनाया गया हो, पर दुर्ग का निर्माण तो होता है और इस दुर्ग के निर्माण में जो मायाविनी शक्ति काम कर रही होती हैं वे ही हैं दुर्गा । जैसे राम के मन का दुर्ग उनकी इच्छा के बिना कोई नहीं हिला सकता वैसे ही रावण के भी मन का दुर्ग उसकी इच्छा के बिना कोई नहीं हिला सकता पर अगर परम मायाविनी शक्ति दुर्गा चाहें तो कुछ भी हो सकता है ।

हर मनुष्य सोचता है कि उसे दुःख या सुख परिस्थिति विशेष के कारण मिल रहा है, अमुक व्यक्ति उसके साथ ऐसा कर रहा है, नहीं कर रहा है परन्तु ऐसा नहीं है । सच तो यह है कि यह मन तो दुर्गा का वह दुर्ग है जो अभेद्य है जिसे कोई भी अगर भेदने की इच्छा रखता है तो उसे दुर्गा की या उस परामाया की शरणाति का हर संभव उपाय करना होगा जिसका सबसे आसान रास्ता ईश्वरभक्ति है या गुरुभक्ति है । क्योंकि उनकी कृपा से यह दुर्गा ही जीवात्मा का मन बन जाती हैं और यही दुर्गा गुरु या ईश्वर के समस्त रूपों में हमारे अनगढ मन को गढती हैं । हमारे मन रूपी दुर्ग के रहस्यों को समझाने वाली परा शिक्षिका माँ दुर्गा ही हैं । तो हम अगर उनसे शिक्षा लें तो हम अपने मन रूप दुर्ग के रहस्य को समझकर इस दुर्ग की सुरक्षा कर सकते हैं और भ्रांति को दूर कर सकते हैं । दुर्गा सप्तशती में ऋषियों ने दुर्गाशक्ति को नमन करते हुए कहा है -

या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।

तो क्रान्तदर्शी ऋषिगण जानते थे कि माता दुर्गा ही हम सबके मनों में स्थित भ्रम भी हैं, बुद्धि भी हैं तो उन्हें प्रसन्न करके ही हम आगे बढ सकते हैं तो उन्होंने वही किया और माँ दुर्गा से अपने आत्मद्वार की कुंजी प्राप्त कर उसे खोला तो जबतक दुर्गा की कृपा से हम अपने मन का दुर्ग ढहाने के लिए तत्पर नहीं होंगे तबतक न तो हम अपनी आत्मा के द्वार पर पहुँच सकते हैं, न ही उस परामाया की माया का भेदन कर सकते हैं और जब उसका भेदन ही नहीं तो अपने शिव स्वरूप में स्थित होकर अन्तरानन्द में निमग्न होना भी संभव नहीं है ।

दुर्गा ही मनुष्य की बुद्धि हैं, अज्ञानता हैं, भ्रम हैं, ज्ञान हैं, वैभव हैं, ऐश्वर्य हैं । उसकी समस्त शक्ति हैं । वे मनुष्य के पूर्व जन्मों में किए गए कर्मों के अनुसार उसके जीवन की पटकथा लिखती हैं । अब यह तो मनुष्य के विवेक की जागृति पर निर्भर है कि उसे दुर्गातत्त्व से क्या सीखना चाहिए ? मन का दुर्ग तो उसका भी है जिस दुर्ग में तोड. - फोड. होती रहती है । अब

इस तोड.-फोड. को समझकर हमें अपने मन के निर्माण की चेष्टा करनी है तो दुर्गा तत्त्व को समझना होगा कैसे मन के समस्त महिषासुरों, ईर्ष्या-विद्वेष रूप सुन्द-उपसुन्दों का सफाया किया जा सके । वास्तव में, मन की नकारात्मकता ही असुर है और मन की सकारात्मकता ही देव है तो देवासुर संग्राम में अगर हमें विजय चाहिए तो हमें दुर्गा की शरणागति चाहिए जो अपने भक्तों की इन असुरों से रक्षा करती हैं और उसे विवेक के प्रकाश से प्रकाशित करती हैं ।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- **जीवन पथ है, राह है और मंजिल है। जीवन में ईश्वरत्व का अनुभव आत्मज्ञान, परमज्ञान है।**
- **अखंड ज्योति केवल आपको विचारों की जानकारी देने नहीं आती। जानकारी, सूचना तो बहुत लोग दे सकते हैं । अखंड ज्योति अगर जीवन विद्या की पत्रिका है तो आपको बताने, सिखाने, मार्गदर्शन करने और सही रास्ते पर चलाने आती है। लेकिन यह तभी संभव है कि जब हम उसे उस रूप में समझें, ग्रहण करें, अपनाएँ।**
- **जानकारी तो हम बहुत कुछ अखबारों से ले लेते हैं, लेकिन पढ़ने के बाद हमारा अखबार से रिश्ता नहीं बन पाता। अगर विचार से रिश्ता बनता है और उन चीजों को हम आत्मसात करते हैं, तब इन सारी बातों की सार्थकता है।**
- **ज्ञान वाला डिपार्टमेंट ब्रह्मा जी का है, भक्ति का डिपार्टमेंट विष्णु जी और शिव जी का है। तीनों लोकों का आपस में कनेक्शन है। सृजन होगा तो पालन भी होगा और फिर संतुलन भी लाया जाएगा यानि प्रलय भी होगा। ज्ञान और भक्ति अलग-अलग हैं। तो आत्माएं ज्ञान के प्रशिक्षण के लिए ब्रह्मलोक में भी रहती हैं और भक्ति के ट्रेनिंग के लिए विष्णु लोक में भी रहती हैं।**
- **भक्ति के बिना खाली ज्ञान सूखा होता है और कभी-कभी भक्ति ज्ञान के बिना अंधभक्ति में चली जाती है । भक्ति को कंट्रोल करने के लिए ज्ञान चाहिए।**
- **भिन्न-भिन्न आत्माएं धरती के दुख को दूर करने के लिए समय-समय पर भेजी जाती है ।**
- **अगर आप यह समझते हैं कि ब्रह्मा का लोक, विष्णु का लोक, शिव का लोक जाकर, ज्ञान मिल जाएगा । यह संभव नहीं है।**
- **परमात्मा के भिन्न-भिन्न रूप और आकार हैं। हम मनुष्य रूप में हैं और वे देव रूप में हैं, फर्क बस इतना ही है। सारे सूर्य को एक परम सूर्य के रूप में अनुभव करना और अलग-अलग घड़े में वही सूर्य प्रकाशित है, यह ज्ञान है और उस परम सूर्य, परम तत्व के साथ अपने को एकाकार कर लेना और यह महसूस करना जो उपनिषद के ऋषियों ने कहा "सोहम्"- वह मैं हूं, यही बोध है।**
- **उपनिषद जिस परम सत्य का बोध कराते हैं, उपनिषदों के पार और परे कोई सत्य नहीं है। क्योंकि उपनिषद की बातें ऋषियों की अनुभूति है। केवल उपनिषद ही ऐसा ज्ञान है जो हमें त्रिगुणातीत की बात बताता है। वही परमात्मा अनगिनत, अनेक रूपों में जीवो में विद्यमान है। परमात्मा के अनगिनत रूप को ही माया कहते हैं।**
- **एक रूप में परमात्मा को जान लेना या परम सत्य को जान लेना माया से मुक्ति है।**
- **जिस दिन यह तत्व दृष्टि विकसित हो जाएगी, ये बातें सभी जीवात्माओं को समझ में भली-भांति आ जाएगी कि मनुष्य जीवन का प्रयोजन क्या है? मनुष्य शरीर की आवश्यकता क्या है? अंधकार हटेगा और प्रकाश फैलेगा। मनुष्य शरीर की आवश्यकता यह है कि इसी जीवन में आप परमात्म तत्व को अभिव्यक्त कर सको। जीवन का उद्देश्य परम तत्व की अभिव्यक्ति है।**

कहानी और कविता क्या है ? विचारों को सरलीकृत करके बोध करा देना विचारों का, इतनी ही उपयोगिता है कथा-कहानियों की। अगर हमने पुराण की कथा दिमाग में रखी और विचार भूल गए, तो फिर इनका क्या उपयोग रहा?

जो ज्ञान होता है वह आरत यानि जो बहुत विकल है ज्ञान के लिए, उसको मिलता है और जो सचमुच में अधिकारी है, उस अधिकारी को ही मिलता है। भगवान आरत और अधिकारी दोनों को ज्ञान देते हैं।

अधिकांश लोग जो जन्म लेते हैं और प्रतिष्ठा पाते हैं, वह ब्रह्मा, विष्णु और शिव की परंपरा से आते हैं, जिनको हम लोग जानते हैं ।धरती पर आने वाली बहुतायत में संख्या इन्हीं तीनों लोक से होती है । कुछ लोग सिद्धों के लोक से भी आते हैं, सिद्धों का भी अपना लोक है, उनका अपना स्थान है । वह भी वरदान देने में सक्षम होते हैं ।

वास्तव में श्राद्ध एक आवश्यक कर्म है। हम सभी को यह कर्म पूरे भाव से करना चाहिए। यह करके हम अपने पूर्वजों को सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। हम उनके आशीर्वाद के, उनकी दुआओं के पात्र बन सकते हैं।

उन्होंने जीते जी हमारे लिए क्या नहीं किया? हमें पाला- पोसा, बड़ा किया, हमारी एक-एक इच्छाओं की पूर्ति की, हमें कभी भूखे पेट सोने नहीं दिया, हमें अपनी गोद में खिलाया, अपना दुलार प्यार लुटाया। अब शरीर छोड़ चुके हैं, जिस कारण अपने से कोई पुण्य कर्म नहीं कर सकते, जिससे वह कोई प्रायश्चित कर सके और स्वयं को मुक्त कर सके। उनको हमारी जरूरत है वे हमारी ओर अपने सूक्ष्म रूप से बड़ी आशा भरी नजरों से देख रहे हैं, उनकी आत्मा किसी कारणवश सूक्ष्म लोक में तड़प रही है ,वे छटपटा रहे हैं ,तो क्या हमारा फर्ज नहीं बनता कि हम शरीर धारी हैं तो उनके लिए खड़े हो जाएं ? हम उनके लिए खड़े होने के पश्चात् क्या करें, क्या नहीं करें इसका मार्गदर्शन गरुड़ पुराण करता है।

श्राद्ध वास्तव में एक प्रकार की श्रद्धा है और श्रद्धा जब उच्च शिखर पर होती है, भावपूर्ण होती है तब कोई कार्य अच्छी तरह से हो पाता है।

पितर बहुत प्यारे होते हैं , हम पर बहुत प्यार उन्होंने लुटाया, हम उन्हीं के वंशज होते हैं। कितना भी उनके लिए करें, पर हम उनके द्वारा लुटाए गए प्यार से उऋण नहीं हो सकते ,पर हां थोड़ा-बहुत तो उस कर्ज को चुका ही सकते हैं।

यह पृथ्वी भोग लोक है । यहां जीवात्माएं कर्म करके अपना अगला- पिछला हिसाब बराबर करने आती हैं। परंतु अज्ञानता वश संसार की चकाचौंध में खोकर अपनी इस महत्वपूर्ण यात्रा को ही भूल जाती है ।जिस कारण उनकी मुक्ति का पथ अंधकार युक्त रहता है।

जरा सोचिए, जब हम जीवन जीना नहीं सीख पाए हैं, जीवन जीने का सलीका नहीं सीख पाए हैं, तो मृत्यु को कैसे समझ लेंगे ? जीवन जीना एक कला है, तो मृत्यु भी एक कला है ।जितना समझने की बात है जीवन, उतना ही समझने की बात है मृत्यु।

खानदान रूपी वृक्ष कब हरा-भरा रहता है? पुष्पित, पल्लवित, विकसित कब होता है ?सुरक्षित कब होता है? जब जड़ मजबूत हो। जड़ कौन है? हमारे पूर्वज, हमारे पुरखे, हमारे पितर। हम जड़ को ना सींचकर पत्ते पर, टहनी पर पानी डाल रहे हैं। इसलिए तो असमय टहनी सूख जाती है, घर में अकाल मृत्यु हो जाती है। जरा सी आंधी आई नहीं, पूरा पेड़ ही उखड़ जाता है। क्यों उखड़ गया? क्योंकि जड़ कमजोर है।

हमारे जीवन में सिर्फ तीन घटनाएं घटती हैं- एक जन्म, एक मृत्यु और एक उनके बीच का सफर, जिसको हम जीवन कहते हैं। हमारा जन्म किस क्षण में हुआ, किस स्थिति में हुआ, उस क्षण से हमारे जीवन को, शरीर को, मन को, परिस्थितियों को जो अंतर्ग्रही ऊर्जाएं है, प्रभावित करने लगती हैं। हमारे जीवन के घटनाक्रम उसी के अनुसार संचालित होने लगते हैं।

वस्तुतः हम मृत्यु को लेकर बहुत आशंकित रहते हैं। हम भय के कारण उसपर चर्चा भी नहीं करना चाहते। यही कारण है कि मृत्यु जब सामने आ खड़ी होती है तो हम स्तब्ध और अवाक रह जाते हैं। कुछ लोग तो इसे सहन नहीं कर पाने के कारण हार्ट अटैक से भी मर जाते हैं। पर ऐसी स्थिति ना आए इसलिए घर में मृत्यु की चर्चा अवश्य करनी चाहिए।

श्रद्धा मीमांसा में वर्णन है कि अगर व्यक्ति के पास वास्तव में श्राद्ध करने के लिए कुछ धन नहीं है, तो वह दोनों हाथ से कुश उठाकर, आकाश की ओर दक्षिण मुखी होकर अपने पूर्वजों का ध्यान कर रोने लगे और जोर-जोर से आरत भाव से कहें कि हे मेरे पितरों, मेरे पास कोई धन नहीं है, मैं तुम्हें इन आंसुओं के अतिरिक्त कुछ नहीं दे सकता । तो उसके पितर उसके आंसुओं से ही तृप्त होकर चले जाते हैं।

जब अहंकार टूटता है किसी भी कारण से, आदमी बेबस और लाचार हो जाता है।

विवशता कई तरह की होती है -धन की होती है, जन की होती है। आपके साथ कोई खड़ा नहीं होता उस विवशता की अनुभूति बहुत दर्दनाक होती है । पर इस विवशता से ज्यादा बड़ी विवशता तन की विवशता होती है। जब बीमार होते हैं, जब आसक्त हो जाते हैं, यह तन की विवशता अहंकार को धूल धूसरित करती है।आपको बताती है कि आप कुछ नहीं हो। यह वो क्षण होता है जब अहंकार ध्वस्त होता है और जब आपका अहंकार ध्वस्त होता है तब भक्ति अंकुरित होती है।

मन की भी विवशता होती है, पर तन जाता है तो आपका सब जाता है, मन भी जाता है।

आप भक्ति को बहुत तरीके से परिभाषित कर सकते हैं-भक्ति प्रार्थना है, भक्ति समर्पण है, भक्ति उपाय है, भक्ति प्रयास है, क्या-क्या है । पर जब आपका अहंकार ध्वस्त है तब आपको नया जीवन अंकुरित होता दिखता है । वह जो कृपा की अनुभूति होती है कि कोई कृपा बरसी हमारे ऊपर, वह भक्ति है ।

संसार एक शोर है और ईश्वर नितांत एकांत है।

जैसे-जैसे मन विस्तार पाता जाता है संसार भी हमारा उतना ही विस्तृत होता चला जाता है। तो मन ही संसार है, शोर उसी में है। वही मन का शोर बाहर प्रकट होता है।

ईश्वर नितांत एकांत है, जब हम उसमें लीन हैं । ईश्वर को हमारी चेतना स्पर्श कर रही है, तो आप भीड़ में भी शांत रहते हैं, भीड़ में भी आप एकांत में रहते हैं। शांत होना, यह निर्भर करता है आपकी चेतना और आपकी वृत्तियां कहां की ओर उन्मुख है?

आयुर्वेद में एक शब्द है बहुलीकरण ,बार-बार करना ।आयुर्वेद कहता है व्यक्तित्व के बारे में, हमारे मन में राक्षस भी है और ऋषि भी है ।आप लगातार-लगातार जिसका आचरण करेंगे, आप वैसे ही हो जाएंगे। आचरण ऐसे ही विकसित नहीं हो जाएगा, पहले हमें समझ विकसित करनी होगी, जिसे हम कहते हैं धारणा। धारणा क्या है? समझ ही तो है । फिर उस पर टिकना पड़ेगा, जिसको हम कहते हैं ध्यान। फिर उस पर टिकना हम सीख जाएंगे । टिकना ऐसे ही नहीं होगा, हमारी वृत्तियां हमें रोकेंगी,अवरोध पैदा करेंगी पर हमें संकल्प पूर्वक लगातार प्रयास करते रहना होगा और जब संकल्प हमारा स्वभाव बन जाएगा, तो सब कुछ अपने आप शांत हो जाएगा।

मुश्किल यह है कि हमारे जीवन का स्रोत हमारा अहंकार बना हुआ है। मैं सेवा करता हूं इसका भी अहंकार हो जाता है, कल्याण करता हूं इसका भी अहंकार हो जाता है । उसने मेरे साथ बुरा किया? मैं उससे बदला लूंगा । यह अहंकार ही हमारे मन में शोर पैदा करता है, विक्षुब्धता पैदा करता है । तो मैं के इर्द-गिर्द हमारा सारा संसार है और हम उसी में पगलाते, घूमते रहते हैं। यह मैं का कॉन्फ़िगरेशन तोड़ना पड़ेगा, संरचना तोड़नी पड़ेगी।

ज्ञान दो तरह का होता है-एक मस्तिष्क का ज्ञान और एक हृदय का ज्ञान। अध्यात्म ज्ञान, आत्मज्ञान मस्तिष्क का ज्ञान नहीं है, हृदय का ज्ञान है। लेखनी और वाणी मस्तिष्क का ज्ञान है। लेकिन जो ईश्वर तत्व का ज्ञान है, वह हृदय का ज्ञान है।

पहले हमें यह जानना चाहिए कि ज्ञान और ज्ञान में फर्क क्या है ?संसार का ज्ञान लौकिक ज्ञान है, मस्तिष्क का ज्ञान है और अध्यात्म का ज्ञान हृदय का ज्ञान है।

आप अच्छा बोल लेते हैं, अच्छा लिख लेते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि आप प्रज्ञावान हैं। आप बुद्धिमान हैं, आप तर्क कुशल हैं, इसका मतलब बस इतना ही है।

जिज्ञासा

प्रश्न- हम जानते हैं कि आत्मा अमर है यानि वह न जन्म लेता है और न ही मरता है। हम यह भी जानते हैं कि एक शरीर के मरने पर आत्मा निकल जाती है और एक जन्म लेते शरीर में आती है। परन्तु विश्व की जनसंख्या बढ़ रही है तो पहला प्रश्न, नई आत्माएं कहाँ से आ रही हैं? दूसरा प्रश्न कुछ आत्माएं पितृ लोक में जाती हैं या भूत योनि में जाती हैं तो वो वापस कब आती हैं? तीसरा प्रश्न जो नई आत्माएं आती हैं,जब उनका कोई पूर्व जन्म नहीं था फिर उनके प्रारब्ध कहाँ से आते हैं?

उत्तर- पहली बात आप जानते नहीं हैं, आपने ये सुना है, आपने पढ़ा है कि आत्मा न जन्म लेती है न मरती है। आपको इसका अनुभव नहीं है, आपको जो अनुभव है वह शरीर का और मन का। आत्मा एक है या अनेक है या नहीं है ये आपको नहीं पता है। विश्व की जनसंख्या बढ़ रही है, आदमी मरता है तो आदमी में ही जन्म लेता है, ऐसा नहीं है, कीट-पतंगा की योनि के बाद उस जीव आत्मा का जन्म इंसानी शरीर में भी हो सकता है। 84,00,000 योनियों में ढेर सारी आत्माएं हैं, कितनी आत्माएं हैं, उसका हिसाब शायद किसी के पास नहीं है, चित्रगुप्त को छोड़कर। सारे ब्रह्मांड में 84,00,000 प्रजातियां हैं, जिसका लेखा जोखा हमें रखने की शायद जरूरत भी नहीं है। कौन आत्मा किस लोक से आई है, कौन किस ब्रह्मांड से आई है, ये हम सब को क्या पता? ये जो पढ़ी-सुनी हुई आपकी बातें हैं, इसके कारण जो आपके अंदर बाल जिज्ञासा उत्पन्न हुई है, उसका समाधान ये है कि यह सिद्धांत इसलिए है कि आप डरें नहीं, आप साहस संजो सकें, आत्मा अमर है, इस सिद्धांत का मूल्य ये है और ये भी सच है कि आप देह तक सीमित नहीं हैं, आपकी चेतना विस्तृत है । ये जो गीता की बात है, वह इसलिए कहा गया कि इन सिद्धांतों के आधार पर आपका व्यक्तित्व विकसित हो सके। दूसरा प्रश्न- कुछ आत्मा पितृ लोक जाती है, कुछ आत्मा प्रेत लोक या प्रेत योनि में चली जाती है, तो वापस कब आती है? प्रकृति के सारे सूत्र और सारे आयाम को पिरोने वाली चीज़ क्या है? वह है कर्म। देश यानि स्थान, काल यानि समय और कर्म, जीवन के केवल यही तीन तत्व हैं। इन तीनों को जोड़ता कौन है ? आपका संकल्प यानि आपकी इच्छा और भावना, किस संकल्प को लेकर के आप जीवन जी रहे हैं? वही संकल्प आपके जीवन का प्रयोजन है। चाहे आप किसी लोक में हैं, जैसे प्रेत लोक है, पितर लोक है, यह स्थान है न, आप पेड़ पौधा बनिए स्थान है न, आप जीव जंतु बनिए स्थान है न, तो आपके कर्म के अनुसार और संकल्प के अनुसार पैदा लेंगे। अगर किसी से बदला लेना है तो आप सांप बन जाएं, बिच्छू बन जाएं, शेर बन जाएं, इंसान में ही हैवान बन जाएं, जैसे 2 दिन पहले अमेरिका में हुआ, भारतीय मूल के व्यक्ति को जो उस होटल में मैनेजर था, उसने वहाँ के सफाई करने वाले स्टाफ को कहा, ये काम न करो। तो बहस किया और फिर उसने कुल्हाड़ी लाकर के उसको मारा, सिर काट कर के सिर को किक मारा और फिर सिर को उठाकर के डस्टबिन में डाल दिया, पहले से उसका अपराधिक चरित्र था। तो जो मूल संकल्प होता है वही आपके जीवन का प्रयोजन होता है। जैसे कर्म का परिपाक होगा काल के द्वारा, समयावधि पूरी होने के बाद आपका देश यानि स्थान परिवर्तन होगा, लोक बदलेगा, अच्छे या बुरे कर्म के अनुसार अच्छा लोक या बुरा लोक मिलेगा, अच्छी योनि या बुरी योनि मिलेगी। दो ही चीजें हैं जो आपको पतन के दायरे में ले जाती है वो है आपकी आसक्ति और आपका अहंकार। अगर आसक्ति और अहंकार नहीं है तो उत्तरोत्तर आप विकसित और प्रकाशित होते चले जाएंगे। ऊंचे स्थान यानि ऊंचे लोक में चलते चले जाएंगे। तो कर्मानुसार देश यानि लोक और काल

का यानि समय का निर्धारण होता है कि कब वो जीवात्मा कहाँ जाएगी। कर्म के परिपाक तक उस लोक में उसे इंतजार करना पड़ता है, चाहे प्रेत लोक हो, भूत लोक हो या पितृ लोक हो या कोई लोक हो। कर्म में कितनी त्वरा और तीव्रता है, ये उस पर निर्भर करता है। महर्षि पतंजलि कहते हैं इस शुक्ल कर्म और कृष्ण कर्म तथा शुक्ल कृष्ण कर्म यानि दोनों के मिश्रण के पीछे आपकी शुभ और अशुभ भावनाएँ होती हैं तथा शुभ-अशुभ के मिश्रण की भावनाएँ होती हैं। तीसरा प्रश्न नई आत्मा आई तो उसका प्रारब्ध कहाँ से आता है? इस प्रश्न के उत्तर में हम आपसे प्रश्न करते हैं कि ये आपको कैसे पता चला कि ये नई आत्मा है या पुरानी आत्मा है? ये सृष्टि चक्र है, ये कालचक्र है, ये यूं ही चलता रहता है। यह सिद्धांत सम्यक विचार के लिए है। विचार कर अपने जीवन को संवारिये। जब अर्जुन विषाद में था, तो भगवान कहते हैं कि जो तुम्हें नहीं सोचना चाहिए, वह सोच रहा है, जिसपर शोक नहीं करना चाहिए, उस पर तो शोक कर रहा है और बातें ज्ञानियों की तरह करता है। ज्ञानियों की तरह बातें करना और मूर्खों की तरह आचरण करना, ये अर्जुन के लिए कृष्ण कह रहे हैं। अर्जुन मूर्ख था क्या? नहीं, अर्जुन विषाद में पड़ा हुआ था। इसलिए उन्होंने ये बातें कही कि तुम डर क्यों रहा है, परेशान क्यों हो रहा है। आत्मा न जन्म लेती है, न मरती है यह अर्जुन का विषाद हटाने के लिए भगवान ने कहा। इन सिद्धांतों का यथार्थ अर्थ समझना होगा, ये बातें जीवन को संवारने वाली बाते हैं। इन सिद्धांतों के आधार पर आप जीवन को गढ़िए, जीवन मूल्य को विकसित करिए।

भगवद्गीता में ही एक तरफ प्रारब्ध की चर्चा है, दूसरी तरफ आत्मा न जन्म लेती है न मरती है, उसकी चर्चा है, फिर इसे कोई मारने वाला नहीं है और कोई मरने वाला नहीं है। इस तरह के विरोधाभासी वक्तव्य बहुत है। सामान्य बुद्धि के अनुसार एक वक्तव्य दूसरे वक्तव्य को काटता हुआ लगता है लेकिन वस्तुतः है नहीं ऐसा। थोड़ी सी धारणा शक्ति विकसित हो जाएगी, आपका मन धारण करने लायक हो जाएगा तो आपकी चेतना में ये तत्व प्रकाशित होंगे। ये सच है कि आत्मा अमर है, आत्मा मरती नहीं है और जब आत्मा नहीं मरती है तो जन्म कौन लेता है? नया शरीर धारण कौन करता है? दरअसल नया शरीर धारण करती है जीवात्मा,आत्मा की जो प्रकृति से गांठ है, तुलसीदासजी कहते हैं, यद्यपि ये गांठ झूठी है, लेकिन छूटती नहीं है। दरअसल यह अहंकार की गांठ है, ये अहंकार ही जन्म लेता है और मरता है। अहंकार ही जीव का प्रारब्ध होता है, आत्मा का कोई प्रारब्ध नहीं होता है। प्रारब्ध जो बनता है, जब आत्मा प्रकृति से आबद्ध होती है मोह ग्रस्त होने के कारण, तब प्रारब्ध कर्म बनता है। प्रारब्ध बनता है आसक्ति और अहंकार से, प्रारब्ध का आधार आसक्ति और अहंकार है। जिस क्षण हम आसक्ति और अहंकार छोड़ने लगते हैं, उसी क्षण प्रारब्ध मिटना शुरू हो जाता है। आसक्ति और अहंकार आपको आत्मा से जीवात्मा बनाता है। अगर आपका बेटा उदंड है, तो आपका प्रारब्ध आपको कष्ट नहीं दे रहा है आपके बेटे का प्रारब्ध आपको कष्ट दे रहा है, क्योंकि आप वहाँ आसक्त हैं। गाँधीजी जिंदगी भर पीड़ित रहे, उनका बेटा हरिदास दारू पीता था। आप जो बेटे के दुराचरण से पीड़ित हैं, बेटे का प्रारब्द्ध आपको कष्ट दे रहा है, क्योंकि आप वहाँ आसक्त हैं। आज के इंसान का रोम-रोम मोहग्रस्त है, जो उनको पीड़ित किये हुए है। आसक्ति से संस्कार बनते हैं, आसक्ति से एक दूसरे का कर्म जुड़ता है। इसलिए भगवद्गीता में अनासक्ति की परिभाषा की गई। इन तत्वों को समझने के लिए आपको अनासक्त होना पड़ेगा, असंग होना पड़ेगा, संग छोड़ना पड़ेगा, क्योंकि आपको केवल आपका कर्म प्रभावित नहीं कर रहा, माता-पिता, पुत्र-पत्नी-भाई बहन का कर्म भी आपको प्रभावित कर रहा है, पर जहाँ-जहाँ आपकी आसक्तिओं की डोर है वहां-वहां आप

प्रभावित हैं। जिसके संग साथ हैं, वह प्रभावित करेगा ही करेगा। जीवात्मा शब्द को समझना है तो आपको असंग होना पड़ेगा, नहीं तो संस्कारों का रेला आपके साथ है।

ये जिज्ञासा स्वाभाविक है कि कैसे पहली आत्मा आई? ठीक है आई, आयी तो फिर बंध कैसे गयी? कुछ आत्माएं आई तो नहीं बंधी, जैसे शुकदेव, वो तो गोलोकधाम से लीला करने आये थे, कहते हैं राधाजी ने श्राप दिया तो धरती पर आ गए, लेकिन मुक्त थे, धरती पर शुक यानि तोता योनि में थे, फिर मनुष्य योनि में आ गए, महर्षि व्यास और उनकी पत्नी वाटिका के पुत्र बनकर, वाटिका अथर्वन् ऋषि की पुत्री थी, शुकदेव मुनि को परमहंस कहा जाता है। वो किसी प्रारब्ध से बंधे नहीं हैं, नित्य-मुक्त-शुद्ध-बुद्ध आत्मा हैं। क्या कभी शुकदेव रोगी हुए, बीमार हुए, परेशान हुए? ऐसी कोई कथा नहीं मिलती। शुकदेव कभी बंधन में नहीं थे। आप कह सकते हैं भागवत सुनकर वो मोहित हुए और दौड़े चले आए, किस पर मोहित हुए? कोई सांसारिक विषयों पर मोहित हुए? भागवत यानि भक्ति, भक्त और भगवान पर मोहित हुए। इस मोह के लिए तो नित्यमुक्त जीव भी तरसते हैं। गोपीनाथ कविराज जी को एक विशिष्ट आत्मा मिली, जीवन मुक्त आत्मा मिली, गोपीनाथ कविराज ने पूछा आप तो सब कुछ पा गए, अब तो कोई जीवन में परेशानी नहीं होगी? नहीं-नहीं हमारे अंदर बहुत तड़प है, फिर पूछा अब तो कोई कर्म बंधन नहीं बचा है?अब तो सब प्रकाशित है? नहीं अभी कुछ कमी है, ईश्वर प्रेम की कमी है, इसी तलाश में हैं। ईश्वर प्रेम में विभोर होना चाहते हैं। भक्ति-भक्त और भगवान के प्रति लगाव का होना, लौ का जगना, इसको अगर हम मोह कहेंगे तो फिर मोह को क्या कहेंगे? भक्ति-भक्त और भगवान तो अमृत कलश है इसमें निमग्न हो जाओ, डूब जाओ, तो अमरत्व को प्राप्त हो जाओगे।इस भक्ति को मोह नहीं कहते, इस भक्ति को केवल परा भक्ति कहते हैं। शुकदेव भागवत के प्रति खींचे चले आये और व्यास आसक्ति और अहंकार से खिंचे चले आए, यही तो फर्क है। जब राजा परीक्षित को श्राप मिला कि तक्षक नाग के काटने से सात दिनों में मर जाओगे तो वो सोचने लगे कि ऐसा कौन सा साधन करें जिससे सात दिनों में मेरी मुक्ति हो जाए, मोक्ष हो जाए, तरनतारण हो जाए। तो सब ऋषियों ने कहा, शुकदेव मुनि अगर भागवत सुना दें, तो बात बन सकती हैं। परीक्षित हस्तिनापुर के राजा, जो मेरठ के पास स्थान है और मुजफ्फरनगर के पास शुकताल है, वहाँ पर शुकदेव मुनि, उस समय जंगल था, यहाँ आकर प्रतिदिन भागवत परीक्षित सुनते थे। ये तय हो गया कि परीक्षित की मृत्यु सात दिनों में निश्चित है, शुकदेव सुना रहे हैं और परीक्षित सुन रहे हैं, मोक्ष तो स्वभाविक है। मोह मुक्त मृत्यु ही तो मोक्ष बनती है। ऋषि व्यास भागवत के लेखाकार, तो लेखक से डायरेक्ट सुनिए न, तो सारे ऋषियों ने कहा लेखक को अनुभव नहीं है, वो लिख दिया, सब भूल गया, वहीं का वहीं ठहरा हुआ है लेखक। जितने ब्रह्म ज्ञानी ऋषि थे,कहा, उनसे कुछ नहीं होगा, व्यास से सुनने से कोई फायदा नहीं है। मज़े की बात, लिखने वाले को नहीं आता है, सुनने वाले को आता है। सुनने वाला तन्मय हो गया, भागवतमय हो गया, भक्तिमय हो गया, भक्त हो गया। आप पूछ सकते हैं कि ऋषि व्यास का भागवत लिखने से अवसाद दूर हुआ, भक्ति की गंगा बही प्रेम की गंगा बही, अनुभव तो हुआ, पर कहाँ शुकदेव और कहाँ व्यास। उनकी आसक्ति और अहंकार पूरी तरह दूर नहीं हुआ, उनको सिर्फ झलकियाँ मिली। भागवत में राधा की चर्चा कहीं नहीं है क्योंकि शुकदेव मुनि ने कहा, सात दिनों में भागवत सुनाना है लेकिन मैं राधा का नाम नहीं लूँगा, राधा नाम से हमें छह महीने के लिए समाधि हो जाती है, 7 दिन में कथा खत्म करनी है। राधा भले ही उनको शाप दी थी, पर बहुत प्रिय थे राधा को और राधा भी उनको बहुत प्रिय थी। राधा एक दिन कही कि यही चिपटा रहता है दिन भर, जा धरती पर घूमकर आ, लोक कल्याण कर जाकर। भगवती या भगवान थोड़े ही शाप देते हैं, उन्होंने

कहा कि थोड़ी देर के लिए यहाँ से टल और जा कर लोग कल्याण करो धरती पर। थोडा घूमेगा तो धरती का वातावरण बदलेगा तेरे घूमने से। इसलिए वो भगा दी थीं।

एक बात यहाँ यह भी समझने की, दो शब्द है नॉलेज और विजडम, नॉलेज शब्द कैसे बना? टू नो आपने जाना, जानना इंद्रियों की सहायता से होता है, विजडम, शब्द कैसे बना? आपको विजन हुआ, आपको अनुभूति हुई,आपकी दृष्टि विकसित हुई। तो ये ज्ञान के दो तरीके हैं, टू नो और टू इक्सिपरीयन्स। अनुभव इंद्रियों से ज्यादा मन से होता है। जैसे कान से सुना या कुछ पढ़ा, ये है परोक्ष अनुभूति, हमने तो देखा नहीं, अफ्रीका के बारे में पढ़ें हैं अफ्रीका को देखे थोड़ी ही हैं, ये है परोक्ष अनुभूति यानि अप्रत्यक्ष अनुभूति और एक आदमी अफ्रीका देखा, घूमा-फिरा, अनुभूति किया, ये है अपरोक्षानुभूति यानि प्रत्यक्ष अनुभूति। परोक्ष अनुभूति नॉलेज है और प्रत्यक्ष अनुभूति विजडम है। यही फर्क है नॉलेज और विजडम का। आग जलाती है ये सुना और आग में ऊँगली जली, ये अनुभव हुआ तो फर्क है दोनों में। नॉलेज का अगला आयाम है, विजडम, ब्रह्म की बात करने से कोई ब्रह्मज्ञानी नहीं हो जाता, उसको अनुभूति होनी चाहिए यानि एक्सपीरियंस होना चाहिए। हम बोलते भी हैं इंद्रियों से जो जानकारी मिलती है, सूचना मिलती है, वह जानकारी है, कई प्रकार के विचार भी मिलते हैं, जानकारी और विचार जब अनुभव में उतरता है तो ज्ञान बनता है और ज्ञान जब पूर्णता को प्राप्त करता है तो विज्ञान बनता है।

आसक्ति और अहंकार प्रारब्द्ध का निर्माण करती है, बाकी आत्मा पर कोई प्रारब्ध है ही नहीं।

प्रश्न- आपसे जितने भी प्रश्न पूछते हैं उन सभी के उत्तर आपको कैसे पता होते हैं ?

उत्तर- इसका उत्तर हम आपको क्या दें, हर आदमी अपनी चेतना के तल पर जीता है, आपके क ख ग के सवाल है और हम हैं आपके प्राइमरी टीचर, ये थोडे है कि हमको सब ज्ञान है। सब ज्ञान नहीं है। आपके सवालों भर का ही ज्ञान है। सारा ज्ञान किसको है संसार में?

प्रश्न- मेरा कोई प्रश्न नहीं है लेकिन मैं यह चाहती हूँ, कि आप हमें महाभारत युद्ध के बारे में शुरू से अंत तक जानकारी दें क्योंकि आप जब बीच से बताते हैं तो हमें कुछ समझ में नहीं आता है।

उत्तर- फिर आपको तो महाभारत पढ़नी होगी, बिना पढ़े आपको समझ में नहीं आयेगी। हम आपको पूरी महाभारत पढ़ा नहीं सकते। गीताप्रेस की दो खंडों में संक्षिप्त महाभारत आती है, उसको लेकर आप पढ़ लीजिए। शुरू से अंत तक समझना है तो आपको पढ़ना पड़ेगा। वैसे महाभारत को शुरू से अंत तक तो गणेश जी नहीं समझ पाए, व्यासजी समझा नहीं पाए। आप पहले पढ़िए, जो मन में प्रश्न उठे, उसे पूछिए।

प्रश्न- आप ध्यान में बोलते हैं तो पूरे ध्यान के समय क्यों नहीं बोलते है, आधे समय बोलकर धुन बजाते हैं, ऐसा क्यों करते हैं?

उत्तर- देखिये हमने पहले भी कहा था, नए व्यक्तियों के लिए ध्यान क्या है उनको बताना तो पड़ेगा, फिर ध्यान के साथ जप और भावना किसकी करनी है, यह तो बताना ही पड़ेगा। हम बोलते ही रहेंगे तो आप जप कैसे करेंगे? आप एकाग्र रहिए इसके लिए संगीत की स्वर लहरी बजाई जाती है। फिर थोड़ी देर के बाद धुन को भी बंद कर दिया जाता है ताकि

आप शांति के वातावरण में अपने को, अपने अंतर्मन को स्पर्श कर सकें। बोला इसलिए जाता है कि मनुष्य उन रेखाओं पर चले, अप्रशिक्षित मन है तो प्रशिक्षित होकर उन रेखाओं पर चले, शांत इसलिए हुआ जाता है कि मनुष्य उन रेखाओं पर टिक जाए। ऐसा हम क्यों करते हैं, अब आपको पता चल गया न।

प्रश्न- भगवान कृष्ण का भगवान शिवजी से क्या रिश्ता है? भगवान शिव ने श्री कृष्ण जी को मुरली क्यों दी?

उत्तर- कृष्ण और शिव का वही रिश्ता है जो विष्णु और शिव का है। ब्रह्मा-विष्णु-महेश त्रिदेव हैं। एक ही आत्मा के तीन रूप हैं। भगवान बिष्णु समयानुसार धरती पर अवतार लेते हैं, उस युग के समय के अनुसार उन्हें धरती पर जिन चीजों की आवश्यकता होती है उन्हें वह मिल जाता है, उनको मुरली मिल जाती है, चक्र मिल जाता है। सबकी अपनी-अपनी कथा है। कोई कहता है सुदर्शन चक्र परशुरामजी ने दिया, कोई कहता है सुदर्शन चक्र शिवजी ने दिया, तो अपनी-अपनी सब बातें हैं। परशुराम ने शिक्षा ग्रहण करने के बाद कृष्ण को यह सुदर्शन चक्र भेंट किया था, परशुराम, भगवान विष्णु के अवतार थे और यह चक्र भगवान विष्णु का ही है, जिसे उन्होंने शिव से प्राप्त किया था। उसी तरह मुरली देने के बारे में भिन्न-भिन्न कथाएं हैं जिनमें से एक सबसे अधिक प्रचलित कथा यह है कि प्रभु के बाल रूप के दर्शन करने नन्द बाबा के घर सभी देवगण आते थे और प्रभु के लिए अपने-अपने भाव अनुसार उपहार भी लाते थे, ऐसे ही भोले नाथ महादेव जी की भी इच्छा हुई तो वे भी कैलाश से चल पड़े नंदबाबा के घर गोकुल, मार्ग में उनकी इच्छा हुई उपहार क्या दिया जाए? कहते हैं महर्षि दधीचि की हड्डियों से महाशक्तिशाली वज्र बना था, उन हड्डियों के कुछ अवशेष मार्ग में भोलेनाथ को दिख गए, अब भोलेनाथ की लीला उन्होंने एक हड्डी का टुकड़ा उठाया और घिसकर भली प्रकार से एक सुंदर बांसुरी का रूप दे दिया। अन्य कथाओं में बांसुरी को माता सरस्वती द्वारा भेंट भी बताया गया और एक कथा में प्रकृति द्वारा दी गई भेंट बबूल के वृक्ष से प्राप्त भी कहते हैं।

प्रश्न- बृहस्पतिवार को और रविवार को तुलसी में जल चढ़ाना चाहिए या नहीं?

उत्तर- बृहस्पतिवार के लिए तो किसी ने नहीं कहा पर रविवार के लिए कुछ लोग कहते हैं जल चढ़ाना चाहिए और कुछ लोग कहते हैं नहीं चढ़ाना चाहिए, जो आपको ठीक लगे वह करिए। ये आपकी मर्जी है। रविवार और एकादशी को तुलसी माता भगवान विष्णु के लिए निर्जला व्रत रखती हैं और जल चढ़ाने से उनका व्रत खंडित हो सकता है इसके विपरीत गुरुवार का दिन तुलसी पूजा के लिए शुभ माना जाता है और इस दिन जल चढ़ाना व घी का दीपक जलाना शुभ माना जाता है जिससे घर में सुख समृद्धि आती है। रविवार और एकादशी के अतिरिक्त सूर्य ग्रहण एवं चंद्र ग्रहण के दिन भी तुलसी में जल नहीं चढ़ाना चाहिए।

प्रश्न- आपने पिछले सप्ताह यह बताया कि यहाँ पर कक्षा छह से दस तक नि:शुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है, क्या इससे आगे की शिक्षा की व्यवस्था हो सकती है?

उत्तर- यहाँ की व्यवस्था से बात कर हम आपको बताएंगे। कोशिश करेंगे कि आगे की पढ़ाई +2 में जो डाउट है उसको कम से कम क्लियर करा सकें।

सितम्बर माह की गतिविधियाँ

दिनांक:– 01 सितंबर 2025 (सोमवार) को गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में कार्यकर्ताओं की गोष्ठी हुई। परिजनों को संबोधित करते हुए ट्रस्टी डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने साधना पर प्रकाश डालते हुए कहा नवरात्रि अनुष्ठान में अधिक से अधिक लोग शामिल हों इसके लिए हम सब को प्रयास करना है। साथ ही व्यवस्था संबंधी विषयों पर विशेष चर्चा हुई... इस बैठक में प्रज्ञा मंडल,महिला मंडल,युवा मंडल,युवती मंडल के सदस्य शामिल हुए... सक्रिय सदस्यों के बीच स्टडी टेबल का वितरण भी किया गया...

गायत्री परिवार के छूटे सदस्य को भी मिला स्टडी टेबल...

दिनांक 02/09/2025 भक्त हनुमान बाल संस्कारशाला (बस स्टैंड के पीछे) सहरसा । बच्चों को दिनचर्या एवं ज्ञान की बात बताते डॉ अरुण कुमार जायसवाल जी...

दिनांक 03/09/2025 (बुधवार) आर्य समाज गायत्री मंदिर डी० बी० रोड सहरसा स्थित ऋतम्भरा बालसंस्कारशाला में झुग्गी झोपड़ी के बच्चों को ज्ञान की बातें बताते डॉ अरुण कुमार जायसवाल.... साथ ही बच्चों के अभिभावकों को बताते हुए उन्होंने कहा, बच्चे 1 घंटा संस्कारशाला में पढ़ते हैं। यहां आचार्यों द्वारा सिखाई जाने वाली अच्छी आदतों को घर पर बच्चों से अमल कराएं...

दिनांक 04/09/2025 (गुरुवार) गायत्री परिवार द्वारा नगरपालिका गंगजला (सहरसा) स्थित चलाए जा रहे प्रज्ञा बाल संस्कारशाला, मे झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले बच्चों को डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने ज्ञान की बातें बतायीं। उन्होंने बताया मानव मात्र एक समान, जाती वंश सब एक समान, नर और नारी एक समान, एक पिता की सब संतान,उन्होंने कहा कोई जाती से छोटा या बड़ा नहीं होता क्योंकि सभी के अंदर ईश्वर वाश करते हैं इसलिए कोई छोटा जाति या बड़ा नहीं है।अपने अंदर हीनता न लाएं साथ ही बच्चों के अभिभावकों को प्रत्येक रविवार को गायत्री शक्तिपीठ आकर यज्ञ कर व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा में शामिल होने के लिए कहा।

दिनांक 5/09/2025 गायत्री शक्तिपीठ,सहरसा में शिक्षक दिवस के अवसर पर बाल संस्कारशाला के बच्चे गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान एवं प्रज्ञा कोचिंग सेंटर के बच्चों के द्वारा शिक्षक दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई...

स्वागत गान गाते बच्चे...

शिक्षक दिवस के अवसर पर छात्रों को संबोधित करते डॉ अरुण कुमार जायसवाल जी....

छात्रों को संबोधित करते हुए प्रोफेसर गौतम जी

छात्रों को संबोधित करतीं हुई डॉ लीना सिंहा जी

छात्रों को संबोधित करतीं प्रोफेसर सुनीता चौधरी जी

छात्रों को संबोधित करते अध्यापक दिनेश कुमार दिनकर जी

छात्रों को संबोधित करतीं प्रोफेसर पूनम जी...

छात्रों को संबोधित करते प्रधानाध्यापक धीरज कुमार जी

छात्रों को संबोधित करते अध्यापक समर जी

दिनांक 5/09/2025 गायत्री शक्तिपीठ,सहरसा में शिक्षक दिवस के अवसर पर बाल संस्कारशाला के बच्चे गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान एवं प्रज्ञा कोचिंग सेंटर के बच्चों के द्वारा शिक्षक दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

दिनांक 05/09/2025 (शुक्रवार) को रेलवे कॉलोनी (सहरसा) स्थित संभावी बाल संस्कारशाला, में शिक्षक दिवस के अवसर पर बच्चों को डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने बताया कैसे दिनचर्या को ठीक रख कर स्वस्थ रहा जा सकता है, प्रातः उठ कर पानी पीना, सोने से पहले ब्रश कर के सोना और भी छोटी छोटी बातें बतायीं। साथ ही उन्होंने बच्चों के अभिभावकों को कहा, बच्चे 1 घंटा संस्कारशाला में पढ़ते हैं। यहां आचार्यों द्वारा सिखाई जाने वाली अच्छी आदतों को घर पर बच्चों से अमल कराएं...

अखंड ज्योति पाठक परिवार सम्मेलन को संबोधित करते परम आदरणीय डॉ अरूण कुमार जयसवाल...

स्वागत गान प्रस्तुत करती बाल संस्कारशाला की देवकन्या...

चंदन लगाकर अतिथि का स्वागत करते हमारे गायत्री परिवार सहरसा के परिजन

कार्यक्रम को संबोधित करतीं डॉक्टर लीना सिन्हा ,विद्यालय प्रमुख, दिल्ली

दीप्ति भारतद्वाज,भोपाल

मयंक भारद्वाज,भोपाल

भोली प्रसाद कंठ जी,दौलतपुर,सुपौल

हरे कृष्ण साह जी,सहरसा

पुरस्कार वितरण (अखंड ज्योति प्रश्नावली के चयनित पाठकगण)

कार्यक्रम में भाग लेते गायत्री परिजन

कार्यक्रम में भाग लेते गायत्री परिजन

कार्यक्रम में भाग लेते गायत्री परिजन

उपजोन समन्वयक (सहरसा, सुपौल, खगड़िया, मधेपुरा, बेगूसराय) संगठन साधना सत्र रविवार को गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में द्वितीय पाली में आयोजित की गई प्रथम पाली में अखंड ज्योति परिवार समागम का आयोजन हुआ, इस संगठन साधना सत्र को डॉक्टर श्री अरुण कुमार जायसवाल जी ने संबोधित किया। इसी क्रम में उन्होंने इन विषयों पर कहा कि कैसे गुरुदेव के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाया जाए, आगे बढ़ाया जाए।

मंच संचालन करते हरीश कुमार जायसवाल जी

अपने जिले की गतिविधियों की जानकारी देते जिला संयोजक एवम मुख्य ट्रस्टी

अपने जिले के युवा मंडल की गतिविधियों की जानकारी देते जिला युवा संयोजक

आये हुए सभी मूर्धन्य परिजनों का आभार व्यक्त करते ट्रस्टी शुकदेव प्रसाद सिंह जी

संगठन साधना सत्र में भाग लेते विभिन्न जिलों से आएं परिजन

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा दिनांक 14 सितंबर 2025 व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए ट्रस्टी डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा परमात्मा के भिन्न भिन्न रूप और आकार हैं हम मनुष्य रूप में हैं और वे देव रूप में फर्क बस इतना ही है सारे सूर्य को एक परम सूर्य के रूप में, अनुभव करना उस परम सूर्य उस परम तत्व के साथ अपने को एकाकार कर लेना और महसूस करना,जो उपनिषद के ऋषियों ने कहा सोहम वह मैं हूँ,यही बोध है। उन्होंने ने परम पूज्य गुरुदेव के विषय में कहा वे धरती पर आकर प्रकाश फैलाए हैं। युग निर्माण योजना के सूत्रधार हैं विचार क्रांति अभियान के जनक हैं पूरे विश्व के आध्यात्मिक जाग्रति के लिए प्रयास कर रहे हैं । विशेष सूचना : गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में दिनांक 14 सितंबर 2025 को दीप प्रज्वलन के साथ एक अभूतपूर्व कार्य स्वास्थ्य क्षेत्र में संपन्न हुआ। सेवा निवृत सिविल सर्जन डॉ अरुण कुमार सिंह जनरल फिजिशियन प्रत्येक रविवार दस बजे से बारह बजे तक निःशुल्क स्वास्थ्य जॉच चिकित्सीय परामर्श स्वस्थ जीवन हेतु मार्गदर्शन के लिए उपस्थित रहेंगे।

जीवन ज्योति कोचिंग सेंटर में दिनांक 19 सितम्बर 2025 को छात्र एवम छात्राओं को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में शामिल होने के लिए प्रेरित करते हुए दिनेश कुमार दिनकर

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा में दिनांक 21 सितंबर 2025 को *व्यक्तित्व परिष्कार सत्र* एवं *सर्वपितृमोक्ष अमावस्या सामूहिक श्रद्ध तर्पण पिंडदान कार्यक्रम* का आयोजन हुआ। इस सत्र को संबोधित करते हुए ट्रस्टी डॉक्टर अरुणकुमार जायसवाल ने कहा— *"वास्तव में श्रद्धा एक आवश्यक कर्म है। हम सभी को यह कर्म पूरे भाव से करना चाहिए। यह करके हम अपने पूर्वजों को सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं और हम उनके आशीर्वाद व उनकी दुआओं के पात्र बन सकते हैं। अब वे शरीर छोड़ चुके हैं, जिस कारण से कोई पुण्य कर्म नहीं कर सकते, जिससे कोई प्रायश्चित कर सकें और स्वयं को मुक्त कर सकें। हम उनके लिए किया करें या न करें, इसका मार्गदर्शन गरुड़ पुराण करता है। गरुड़ पुराण एक मार्गदर्शन पुराण है, एक पथप्रदर्शक पुराण है। यह पृथ्वी भोगलोक है, जहां जीवात्मा कर्म करके अगला-पिछला हिसाब बराबर करने आती है, परंतु अज्ञानवश संसार की चकाचौंध में खोकर अपनी इस महत्वपूर्ण यात्रा को भूल जाती है। अगर गरुड़ पुराण पढ़ें और उसकी शिक्षाओं को समझें तो कोई कारण नहीं कि हमारी आत्मा या हमारे पितरों की आत्मा सूक्ष्म जगत में कोई कष्ट पाए।"* इस अवसर पर बड़ी संख्या में परिजन अपने पूर्वजों यानी पितरों के लिए *श्रद्ध तर्पण* किए। *कल यानी 22 सितंबर 2025 को सुबह 7 बजे से नवरात्रि अनुष्ठान का पूजन कार्यक्रम होगा।*

हर रोज की भांति आज भी देवजनों के बीच गायत्री परिवार सहरसा, भोजन प्रसाद वितरण करते हुए.....

श्रमदान करतीं महिला मंडल, गायत्री शक्तिपीठ सहरसा

दिनांक 22-09-2025 शारदीय नवरात्रि का प्रथम दिन कलश स्थापना,नव दुर्गा के प्रथम स्वरूप माता शैल पुत्री का पूजन,अनुष्ठान का संकल्प,जप के समय आधार चक्र ध्यान

प्रथम दिवस माता शैलपुत्री का प्रेममयी दर्शन....एवम कलश पूजन

शारदीय नवरात्रि प्रथम दिवस (माता श्री शैलपुत्री पूजन)

प्रथम रूप माता श्री शैलपुत्री के पूजन के महत्व को समझाते डॉ श्री अरुण कुमार जायसवाल जी....

माता शैलपुत्री के पूजन में भाव विभोर होते श्रद्धालुगण.....

प्रणाम ...प्रगेश्वर महादेव

साहित्य खरीदते भक्तगण...

पूजन पात्र यथावत अपने स्थान पर...

उपस्थित श्रद्धालुगण

शारदीय नवरात्रि द्वितीय रूप (माता श्री ब्रह्मचारी पूजन)

श्रद्धालु गण को संबोधित करते आदरणीय श्री अरुण कुमार जायसवाल....

माँ ब्रह्मचारिणी की आरती.....

पुष्पांजलि हेतु कतरबद्ध भक्तगण...

शारदीय नवरात्रि तृतीया रूप (माता श्री चंद्रघंटा पूजन)

पूजन करवाती देवकन्याएं...

उपस्थित श्रद्धालु व कार्यकर्तागण

https://gsps.co.in/

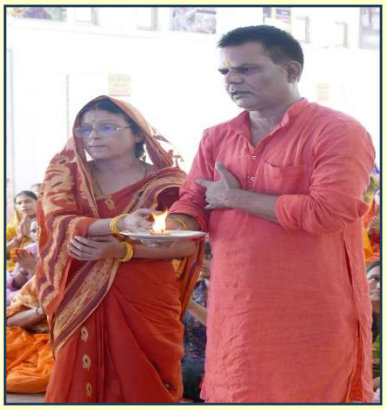

आरती.....

शारदीय नवरात्रि चतुर्थी माता श्री कुष्मांडा पूजन...

योग में शाध्यान-जप के समय की कुछ

योग में शामिल भक्तगण

पुनः चतुर्थ रूप माता श्री कूष्मांडा पूजन...

पूजन करवाती देव कन्याएं...

उपस्थित श्रद्धालु गण

ध्यान में डूबे भक्तगण ...

समर्पण....

विसर्जन....

विलय.....

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा जहाँ नई पीढ़ी मोबाइल छोड़कर माला पकड़ना सीख रही है...

पूजन के बाद सभी बर्तन को श्रद्धा पूर्वक साफ करते महिला मंडल..

योग करते साधक गण

स्कंद माता पूजन...

षष्ठम रूप माता श्री कात्यायनी पूजन

गुरु दीक्षा लेते युवा....

पुंसवन संस्कार

सप्तम रूप माता श्री कालरात्रि पूजन ...

प्रार्थना—गीत गाते और गवाते आदरणीय अरुण कुमार जायसवाल...

पूजन कराते युवामंडल के सदस्य गण

पुष्पांजलि हेतु कतारबद्ध श्रद्धालु....

योग साधना करते साधक गण

साधना में मग्न साधक

प्रार्थना गीत का आनन्द उठाती एक छोटी सी बच्ची...

आरती करते मुख्य प्रतिनिधि

देवी का अष्टम रूप- माता महा गौरी

श्रद्धालुओं को संबोधित करते आदरणीय डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल...

भगवती महागौरी का पूजन...

उपस्थित श्रद्धालु...

गायत्री परिवार के छोटे - छोटे ,नन्हे - मुन्ने साधक ...

ध्यान साधना करते युवा मंडल...

पुष्पांजलि...

नम्रता...

प्रतिज्ञा

लवली

दैनिक समाचार पत्रो में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

कंकड़बाग स्थित गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ बिहार की ओर से आयोजित राज्यस्तरीय युवा संगोष्ठी में मौजूद वक्ता। • हिन्दुस्तान

घर-घर गायत्री मंत्र पहुंचाने का युवाओं ने संकल्प लिया

पटना, प्रधान संवाददाता। अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के बैनर तले रविवार को गायत्री शक्तिपीठ, कंकड़बाग स्थित प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ बिहार द्वारा राज्यस्तरीय युवा संगोष्ठी 2025 आयोजित हुई। इसमें सभी जिले से युवा प्रतिनिधि आए।

युवा संगोष्ठी अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य (संरक्षक) की धर्मपत्नी माता भगवती देवी शर्मा (अखिल विश्व गायत्री परिवार की सरंक्षिका) के जन्म और गरुदेव श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रज्जवलित अखंड दीपक के प्रज्वलन के सौ वर्ष पूरे होने पर सालभर होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने के लिए किया गया। अखंड दीप के संरक्षण में गुरुदेव ने 24-24 लाख के 24 गायत्री महापुरश्चरण की साधना किए। इसकी

कंकड़बाग स्थिति गायत्री शक्तिपीठ में राज्य स्तरीय युवा संगोष्ठी आयोजित

जन्मशताब्दी 2026 में मनायी जाएगी गोष्ठी में प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ बिहार के संयोजक मनीष कुमार ने कहा कि अखंड दीप जन्मशताब्दी तब ही सफल होगा, जब हम सब समयदान देकर ज्यादा से ज्यादा घरों तक गायत्री महामंत्र एवं गुरुदेव के विचारों को लेकर जाएंगे युवाओं ने संकल्प लिया कि हर घर में गायत्री महामंत्र, देवस्थापना, पौधरोपण, नशा उन्मूलन, गंगा सफाई, को जन जन तक पहुंचाएंगे। पटना जोनल प्रभारी अरविन्द बाबु, उपसमन्वयक लालबाबू, प्रिंस रंजन, निशांत रंजन, अभिषेक पाठक, रजीव रंजन, सच्चिदानंद, अनिल ने सहयोग दिया।

व्यक्तित्व परिष्कार सत्र : पठन के बाद मनन व मिशन कार्य को बढ़ाए आगे

कार्यक्रम मे मौजूद गायत्री परिजनछाया सौजन्य : शक्तिपीठ • जागरण

संस, सहरसा: रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार सत्र दो सत्रों में आयोजित हुआ। प्रथम सत्र में अखंड ज्योति पाठक परिवार समागम हुआ, जिसका शुभारंभ दीप प्रज्वलन से किया गया। इस कार्यक्रम में भोपाल से मयंक भारद्वाज एवं दीप्ति भारद्वाज तथा दिल्ली से डा. लीना सिन्हा एवं राजेश अस्थाना ने भाग लिया। सत्र को संबोधित करते हुए डा. अरुण कुमार जायसवाल ने अखंड ज्योति पाठक परिवार के समागम में अखंड ज्योति की पूरी टीम उपस्थित लोगों का अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि जीवन यात्रा है। जीवात्मा यात्री अखंड ज्योति प्रश्नावली का उद्देश्य है, जो सद्विचार हम पढ़ते हैं, उसका अगला चरण है आत्मसात। कहा कि पठन के बाद मनन तथा मिशन के कार्यों को आगे बढ़ाएं विचार क्रांति अभियान विचारों को बदलेंगे एवं सदबुद्धि को जनमानस में फिर से बढ़ाएंगे। इस अवसर पर मयंक भारद्वाज ने कहा कि अखंड ज्योति को स्वयं पढ़ें एवं जीवन में उतारने की कोशिश करें। दूसरे सत्र में संगठन साधना सत्र कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ जिसमें सहरसा मधेपुरा सुपौल खगड़िया बेगूसराय के सभी ट्रस्टी जिला समन्वक एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस सत्र को संबोधित करते हुए डा. अरुण कुमार जायसवाल ने बताया साधना अंतर्मुखी होती है और संगठन बहिर्मुखी। उपस्थित ट्रस्टी एवं जिला समन्वयकों ने अपने जिला का प्रगति प्रतिवेदन विस्तार से जानकारी दिया।

जीवन यात्रा है व जीवात्मा यात्री : डॉ अरुण

- गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र दो सत्रों में हुआ संपन्न

प्रतिनिधि, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र दो सत्रों में संपन्न हुआ. प्रथम सत्र में अखंड ज्योति पाठक परिवार समागम हुआ. जिसका शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ. इस कार्यक्रम में भोपाल से मयंक भारद्वाज, दीप्ति भारद्वाज व दिल्ली से डॉ लीना सिन्हा व राजेश आस्थाना मौजूद थे. सत्र को संबोधित करते डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने अखंड ज्योति पाठक परिवार के समागम में अखंड ज्योति की पूरी टीम की ओर से अतिथियों का स्वागत किया. उन्होंने कहा कि जीवन यात्रा है एवं जीवात्मा यात्री.

संबोधित करते डॉ अरुण जायसवाल.

अखंड ज्योति प्रश्नावली का उद्देश्य है जो सद्विचार हम पढ़ते हैं उसका अगला चरण है आत्मसात. पठान के बाद मनन व मिशन के कार्यों को आगे बढ़ाएं. विचार क्रांति अभियान विचारों को बदलेंगे एवं सदबुद्धि को जनमानस में फिर से बढ़ाएंगे. इस अवसर पर भोपाल से आए मयंक भारद्वाज ने कहा कि अखंड ज्योति को स्वयं पढ़ें एवं जीवन में उतरने की कोशिश करें. दूसरे सत्र में संगठन साधना सत्र कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ. जिसमें सहरसा, मधेपुरा, सुपौल, खगड़िया, बेगूसराय के सभी ट्रस्टी, जिला समन्वक व सक्रिय कार्यकर्ताओं ने भाग लिया. सत्र को संबोधित करते डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने बताया कि साधना अंतर्मुखी होती है व संगठन बहिर्मुखी. सभी ट्रस्टी व जिला समन्वक अपने जिला का प्रगति प्रतिवेदन विस्तार से बताया. साथ ही सभी युवा कार्यकर्ता अपने जिला आगामी कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी. इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सभी परिजन मौजूद थे.

साधना होता अंतर्मुखी व संगठन बहिर्मुखी

सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन हुआ। प्रथम सत्र में अखंड ज्योति पाठक परिवार समागम हुआ जिसका शुभारंभ भोपाल से मयंक भारद्वाज एवं दीप्ति भारद्वाज तथा दिल्ली से डॉक्टर लीना सिन्हा एवं राजेश आस्थाना ने किया। डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा जीवन यात्रा है जीवात्मा यात्री अखंड ज्योति प्रश्नावली का उद्देश्य है जो सद्विचार हम पढ़ते हैं दूसरे सत्र में संगठन साधना सत्र कार्यक्रम हुआ। डा. जायसवाल ने बताया साधना अंतर्मुखी होती है और संगठन बहिर्मुखी। इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सभी परिजन उपस्थित थे।

परमात्मा के भिन्न रूप व हैं आकार : डॉ अरुण

सहरसा. गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया. सत्र को संबोधित करते ट्रस्टी डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा

कि परमात्मा के भिन्न भिन्न रूप व आकार हैं. हम मनुष्य रूप में हैं. उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के विषय में कहा कि वे धरती पर आकर प्रकाश फैलाते हैं. युग निर्माण योजना के सूत्रधार हैं. विचार क्रांति अभियान के जनक हैं. पूरे विश्व के आध्यात्मिक जाग्रति के लिए प्रयास कर रहे हैं. गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम में डॉ अरुण कुमार जायसवाल जैसे विशेषज्ञ वक्ता अपने अनुभव एवं ज्ञान को साझा करते हैं. वे व्यक्ति को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में व अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करते हैं. वहीं गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को दीप प्रज्वलन के साथ एक अभूतपूर्व कार्य स्वास्थ्य क्षेत्र में संपन्न हुआ. सेवानिवृत सिविल सर्जन डॉ अरुण कुमार सिंह जेनरल फिजिशियन प्रत्येक रविवार दस बजे से बारह बजे तक निशुल्क स्वास्थ्य जांच व चिकित्सीय परामर्श देंगे. साथ ही स्वस्थ जीवन के मार्गदर्शन के लिए उपस्थित रहेंगे.

अपने लक्ष्यके प्रति सजग रहे युवा

सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए ट्रस्टी डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा अपने लक्ष्य के प्रति युवा सजग रहे। विशेषज्ञ वक्ता अपने अनुभव और ज्ञान को साझा करते हैं वे व्यक्ति को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में तथा अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करते है। मौके पर निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का शुभारंभ किया गया। जिसमें हरेक रविवार सेवानिवृत सिविल सर्जन डा. अरूण कुमार सिंह लोगों के स्वास्थ्य की जांच करेंगे।

दैनिक भास्कर सहरसा 22-09-2025

शहर-समाज

दैनिक भास्कर, भागलपुर | सोमवार, 22 सितंबर, 2025 | 20

पितृ मोक्ष अमावस्या • पूर्वजों को लोगों ने कर्म के माध्यम से दी श्रद्धांजलि, आज सुबह 7 बजे से नवरात्रि अनुष्ठान का पूजन

गायत्री शक्तिपीठ में श्राद्ध, तर्पण व पिंडदान कार्यक्रम का आयोजन

भास्कर न्यूज | सहरसा

स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र एवं सर्व पितृ मोक्ष अमावस्या के अवसर पर सामूहिक श्राद्ध, तर्पण, पिंडदान कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में पहुंचे लोगों ने अपने पूर्वजों के लिए पितृ मोक्ष संस्कार संपन्न किया।

ट्रस्टी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि वास्तव में श्राद्ध एक आवश्यक कर्म है। हम सभी को यह कर्म पूरे भाव से करना चाहिए। हम अपने पूर्वजों को सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। हम उनकी दुआओं के पात्र बन सकते हैं। अब वे शरीर छोड़ चुके हैं, जिस कारण कोई पुण्य कर्म नहीं कर सकते हैं। कोई प्रायश्चित कर सकें और स्वयं को मुक्त कर सकें। हम उनके लिए क्या करें, इसका मार्गदर्शन गरुड़ पुराण करता है। उन्होंने बताया कि गरुड़ पुराण एक मार्गदर्शन पुराण है। एक पथ प्रदर्शक पुराण है। डॉ. जायसवाल ने कहा कि यह पृथ्वी भोग लोक है जहां जीवात्मा कर्म करके अगला पिछला हिसाब बराबर करने आती है। परंतु अज्ञानवश संसार की चकाचौंध में खोकर अपनी इस महत्वपूर्ण यात्रा को भूल जाती है। अगर गरुड़ पुराण पढ़ें, उसकी शिक्षाओं को समझें तो कोई कारण नहीं कि हमारी आत्मा या हमारे पितरों की आत्मा सूक्ष्म जगत में कोई कष्ट पाएगी। इस अवसर पर बड़ी संख्या में लोगों ने अपने पूर्वजों यानि पितरों के लिए तर्पण किए। इस अवसर पर जानकारी दी गई कि आज सुबह 7 बजे से नवरात्रि अनुष्ठान का पूजन कार्यक्रम होगा।

रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में सामूहिक रूप से तर्पण करते लोग।

कात्यायनी की कृपा से कष्ट होते हैं दूर : अरुण

सहरसा | स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को नवदुर्गा के छठे स्वरूप माता कात्यायनी की पूजा एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए ट्रस्टी डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि साधना के समस्त अवरोध माता कात्यायनी की कृपा से दूर हो जाते हैं। समस्त अवरोध से पार पाने की क्षमता माता कात्यायनी की कृपा से मिलती है। माता कात्यायनी की पूजा से दुख से आभार की ओर ऊर्जा का गमन होता है। साधना का प्रभाव प्रबल होता है। उन्होंने कहा कि गायत्री माता एवं गुरुदेव की कृपा से पूरे भारत सहित विश्व में गायत्री शक्तिपीठ का निर्माण हुआ, ताकि सभी लोग सामूहिक उपासना एवं साधना कर सके। लोभ एवं अहंकार को साध सके। अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत कर सके। नवरात्रि साधना हमें यह अवसर प्रदान करता है । इस अवसर पर कई सामूहिक संस्कार हुए। संस्कार का महत्व बताते हुए डॉ जायसवाल ने कहा कि जीवन के सही निर्माण के लिए संस्कार जरूरी है। अच्छे संस्कार से ध्रुव, प्रहलाद, नचिकेता जैसे जागृत आत्मा का धरती पर आगमन होता है। उन्होंने बताया कि गायत्री गुरू मंत्र है। गायत्री मंत्र के जप से आत्मिक एवं भौतिक, दोनों प्रगति होती है। कर्मकांड मनीषा ,मधु एवं दीप्ति ने करवाई। मुख्य यजमान पंकज जायसवाल सपत्नीक थे।

कलश स्थापन के साथ नवरात्र आरंभ

जगह–जगह पर दुर्गा मंदिरों में जुटने लगी **श्रद्धालुओं की भीड़** गूंजने लगा पाठ

संवाद सूत्र, जागरण, सहरसा: जिले में कलश स्थापन के साथ नवरात्रा शुरू हो गया। सोमवार को कलश स्थापन के साथ आदिशक्ति मां दुर्गा के प्रथम स्वरूप मां शैलपुत्री की पूजा अर्चना की गयी। कलश स्थापन को लेकर पहले से ही दुर्गा मंदिरों की साफ-सफाई व रंग रोगन कर लिया गया। अहले सुबह से दुर्गा मंदिरों में दुर्गा सप्तशती का पाठ गूंजने लगा।

शहर के बड़ी दुर्गा स्थान के पुजारी फूल झा ने बताया कि आदि शक्ति मां दुर्गा की पूजा अर्चना के बाद दिन भर दुर्गा सप्तशती का पाठ निरंतर चल रहा है। विजयादशमी दो अक्टूबर को है। संध्याकालीन आरती में भक्तों की भीड़ जुटनी शुरू हो गयी है। नवरात्रि को लेकर शहर के अन्य धार्मिक स्थलों पर भी कलश स्थापन के साथ पूजा शुरू की गयी।

गायत्री में चल रहा सामूहिक मंत्रोच्चारण • जागरण

गायत्री शक्तिपीठ में हुआ विशेष पूजन : शहर के गायत्री शक्तिपीठ में शारदीय नवरात्रि अनुष्ठान संकल्प कलश स्थापन एवं प्रथम दिवस माता शैलपुत्री का पूजन हुआ। नवरात्रि के महत्व को बताते हुए ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा नवरात्रि का मर्म जानना जरूरी है। इन दिनों अंतरिक्ष से विशेष ऊर्जा धरती पर आती है। इस समय की गई साधना साधक को तेजस्वी ओजस्वी बनाता है। नौ दिनों में अपने अंदर के सारे लोभ मोह कलेश को दूर करके पूर्णता में बदल सकते हैं।

नवरात्रि के प्रथम दिन माता शैलपुत्री का पूजन करके मन को शांत हिमालय की तरह तन को स्थिर करके जीवन में पूर्णता की प्राप्ति कर सकते हैं। इस अवसर पर कलश पूजन एवं सभी देव शक्तियों का आह्वान का करम संपन्न हुआ। गायत्री परिजन 24000 गायत्री मंत्र का संकल्प लिया। सायंकालीन सत्र में आरती चालीसा एवं रामकथा का भक्तिमय प्रस्तुतीकरण होगा। मुख्य यजमान पंकज जायसवाल सपत्नीक थे। पूजन कर्मकांड मनीषा, मधु, लक्ष्मी आदि ने कराया।

इन मंदिरों में की गई कलश की स्थापना

शहर के बड़ी दुर्गा स्थान, पूर्वी रेलवे कालोनी दुर्गा मंदिर, पश्चिमी रेलवे कालोनी दुर्गा मंदिर, कालेज गेट दुर्गा मंदिर, पंचवटी दुर्गा मंदिर, प्रशांत रोड दुर्गा मंदिर, थाना चौक दुर्गा मंदिर, सहरसा कचहरी दुर्गा मंदिर, जीआरपी बैरक दुर्गा मंदिर, बटराहा दुर्गा मंदिर, जेल गेट दुर्गा मंदिर सहित अन्य जगहों पर स्थित दुर्गा मंदिरों में कलश पूजन पूरे भक्ति भाव के साथ हुआ।

शारदीय नवरात्र. आस्था व भक्ति के साथ कलश स्थापना, पहले दिन हुई मां शैलपुत्री की पूजा

हर ओर गूंज रहे दुर्गा सप्तशती के श्लोक

प्रतिनिधि, सहरसा

शारदीय नवरात्रि की शुरुआत सोमवार से जिले के सभी मंदिरों सहित घरों में शुरू हो गयी. सुबह सवेरे से घर व पूजा पंडालों में कलश स्थापना को लेकर तैयारी शुरू की दी गयी. जहां विधि विधान से कलश स्थापना कर दुर्गा सप्तशती का पाठ शुरू किया गया. अगरबत्ती, धूप से वातावरण में भक्ति का रंग घुल चुका है. पंडित कामेश्वर झा एवं पंडित डॉ नवनीत ने बताया कि सोमवार को अमृत सिद्धि योग बनने से सभी कार्य सिद्ध व शुभ फल प्रदान करेंगे. वहीं नवरात्रि के पहले दिन मां शैलपुत्री की पूजा की गयी.

उन्होंने कहा कि माता शैलपुत्री बेहद दयालु एवं कृपालु हैं. मां शैलपुत्री बायें हाथ में कमल पुष्प एवं दायें हाथ में त्रिशूल धारण करती हैं. इनकी सवारी वृषभ है. मां शैलपुत्री चंद्रमा से संबंध रखती हैं. इन्हें सफेद रंग की खाद्य पदार्थ का भोग लगाया जाता है. जबकि बेहतर स्वास्थ्य एवं लंबी आयु के लिए मां शैलपुत्री को गाय के घी का भोग या गाय के घी से बनी मिठाइयों का भोग लगायी जाती है. पंडित झा ने बताया कि नवरात्र में माता के आगमन की सवारी देवी शक्ति का वाहन शेर होता है. देवी जब भी पृथ्वी लोक पर विचरण करती हैं तो अलग अलग वाहन पर सवार होकर आती है. इसके लिए सप्ताह के दिनों पर यह निर्भर करता है.

मंदिर में स्थापित कलश व मौजूद श्रद्धालु.

कार्यक्रम में शामिल श्रद्धालु.

नवरात्रि में धरती पर आती है विशेष ऊर्जा : डॉ अरुण

सहरसा. गायत्री शक्तिपीठ में सोमवार व शारदीय नवरात्रि अनुष्ठान संकल्प कलश स्थापन एवं प्रथम दिवस माता शैलपुत्री का पूजन कार्य संपन्न हुआ. नवरात्रि के महत्व को बताते ट्रस्टी डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि नवरात्रि का मर्म जानना जरूरी है. इन दिनों अंतरिक्ष से विशेष ऊर्जा धरती पर आती है. इस समय की गयी साधना साधक को तेजस्वी ओजस्वी बनाता है. नौ दिनों में अपने अंदर के सारे लोभ, मोह, काम को दूर करके पूर्णता में बदल सकते हैं. नवरात्रि के प्रथम दिन माता शैलपुत्री के पूजन करके मन को शांत हिमालय की तरह तन को स्थिर करके जीवन में पूर्णता की प्राप्ति कर सकते हैं. उन्होंने कहा कि निर्मल मन में समाधि लगती है. सामूहिक साधना धरती के भाग्य को बदल देगी. कृपा की अनुभूति ही भक्ति है. इस मौके पर कलश पूजन एवं सभी देवशक्तियां का आह्वान कार्य संपन्न हुआ. गायत्री परिजन 24 हजार गायत्री मंत्र का संकल्प लिया. उन्होंने कहा कि शरणागति भाव से नवरात्रि के संकल्प का मुहूर्त आपके जीवन को निहाल कर देगे. सायंकालीन सत्र में आरती चालीसा व रामकथा का भक्तिमय प्रस्तुतीकरण होगा.

मां ब्रह्मचारिणी की पूजा से जीवन में मिलती है सफलता

प्रतिनिधि, सहरसा

मंगलवार को देवी दुर्गा के दूसरे स्वरूप मां ब्रह्मचारिणी की पूजा होगी. जिसे अत्यंत फलदायी माना जाता है. ऐसी मान्यता है कि इससे तपस्या और आत्मसंयम की प्राप्ति की जाती है. नाम के अनुरूप ही माता की पूजा करने से भक्त को ज्ञान और तप का लाभ होता है. जिससे जीवन में सफलता मिलती है.

मां ब्रह्मचारिणी का स्वरूप अत्यंत सौम्य और तेजस्वी है, जो भक्तों को आशीर्वाद और समृद्धि का वरदान देती हैं. उनके दाहिने हाथ में जप की माला और बाएं हाथ में कमंडल है. जप माला उनकी तपस्या और भक्ति के प्रतीक हैं, जबकि कमंडल तप और साधना की निष्कलंक प्रतीक है. वह सफेद वस्त्र धारण करती है, जो उनकी पवित्रता और सात्विकता का प्रतीक है. उनका यह रूप संयम, तपस्या और ज्ञान का प्रतीक है. पौराणिक कथाओं के अनुसार मां ब्रह्मचारिणी ने अपने पूर्व जन्म में पार्वती के रूप में जन्म लिया था. उन्होंने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए कठोर तपस्या की थी.

मां ब्रह्मचारिणी की पूजा का महत्व

मां ब्रह्मचारिणी की पूजा से व्यक्ति को धैर्य, संयम और तपस्या की शक्ति मिलती है. यह पूजा मन को शुद्ध करके आत्मविश्वास बढ़ाती है. मां ब्रह्मचारिणी ज्ञान और साधना की देवी हैं, इनकी पूजा से बुद्धि तीव्र होती है. जो भक्त सच्चे मन से मां की आराधना करते हैं, उनके सभी कष्ट दूर होते हैं.

अपने लक्ष्यके प्रति सजग रहे युवा

सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए ट्रस्टी डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा अपने लक्ष्य के प्रति युवा सजग रहे। विशेषज्ञ वक्ता अपने अनुभव और ज्ञान को साझा करते हैं वे व्यक्ति को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में तथा अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करते है। मौके पर निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का शुभारंभ किया गया। जिसमें हरेक रविवार सेवानिवृत सिविल सर्जन डा. अरूण कुमार सिंह लोगों के स्वास्थ्य की जांच करेंगे।

गत्यात्मक मेरु वक्रासन के लाभ

परिचय :—

गत्यात्मक मेरु वक्रासन एक योगासन है जिसमें स्पाइनल ट्विस्ट को बार-बार और नियंत्रित गति से दोहराया जाता है, जिससे रीढ़ की हड्डी मजबूत होती है, पाचन सुधरता है, और कमर व पेट की मांसपेशियों को लाभ मिलता है। इस आसन में एक पैर को मोड़कर दूसरे पैर के पार रखते हुए धड़ को मोड़ते हैं, और फिर इसी प्रक्रिया को दूसरी तरफ दोहराते हैं।

गत्यात्मक मेरु वक्रासन करने की विधि :—

1. दोनों पैरों को फैलाकर फर्श पर बैठ जाएं।
2. घुटनों को मोड़े बिना, पैरों को यथासंभव दूर रखें।
3. भुजाओं को कंधे के स्तर पर बगल में फैलाएं।
4. बाजुओं को सीधा रखते हुए, सांस छोड़ते हुए बाईं ओर मुड़ें और दाहिने हाथ को बाएं पैर के अंगूठे की ओर नीचे लाएं।
5. सीधे बाएं हाथ को पीठ के पीछे खींचें, धड़ को बाईं ओर मोड़ें, दोनों हाथों को एक सीधी रेखा में रखें।
6. सिर को बायीं ओर घुमाएं और बायीं ओर फैले हुए हाथ को देखें।
7. बाएं पैर के अंगूठे पर से पकड़ छोड़ दें, और सांस लेते हुए अपनी दृष्टि, भुजाओं और धड़ को सामने की ओर ले आएं।
8. सांस छोड़ते हुए विपरीत दिशा में मुड़ें और बाएं हाथ को दाहिने पैर के अंगूठे की ओर नीचे लाएं।
9. सीधे दाहिने हाथ को पीठ के पीछे ले जाएँ। सिर को दाहिनी ओर घुमाएँ और दाहिने फैले हुए हाथ को देखें।
10. यह एक राउंड है।

गत्यात्मक मेरु वक्रासन के लाभ :—

रीढ़ की हड्डी का स्वास्थ्य: यह आसन रीढ़ की हड्डी को स्वस्थ और मजबूत बनाता है।

पाचन क्रिया में सुधार: पाचन अंगों को उत्तेजित करता है, जिससे पाचन बेहतर होता है और कब्ज व गैस से राहत मिलती है।

पेट की चर्बी कम करना: पेट की चर्बी कम करने में सहायक है।

कमर का दर्द कम करना: पीठ और कमर के निचले हिस्से के दर्द से राहत दिलाता है।

रक्त संचार बढ़ाना: रक्त संचार को बढ़ावा देता है और शरीर के अंगों तक रक्त पहुँचाने में मदद करता है।

मानसिक संतुलन: मानसिक और भावनात्मक संतुलन को सुधारने में सहायक है।

सावधानियां :—

शुरुआती लोगों को किसी योग विशेषज्ञ की देखरेख में ही इसका अभ्यास करना चाहिए।

स्लिप डिस्क (खिसकी हुई चकती) वाले लोगों को यह आसन नहीं करना चाहिए।

माह सितंबर में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में भाग लिया -

- श्री भोली प्रसाद कंठ (दौलतपुर, राघोपुर, सुपौल) - अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- श्रीमती दिप्ती भारद्वाज (भोपाल) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ, अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- श्री मयंक राव भारद्वाज (भोपाल) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ, अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- वर्चस भारद्वाज (भोपाल) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ, अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- डॉ. अरुण कुमार सिंह, सेवा निवृत सिविल सर्जन (सहरसा) - व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया एवं प्रत्येक रविवार (प्रातः 10:00 से 12:00) को निःशुल्क चिकित्सा परामर्श के लिए उपस्थित रहेंगे।
- श्री अभिनव जी (सिविल जज, सहरसा) अपनी पत्नी श्रीमती मोनिका जी के साथ नवरात्रि काल में राम कथा में भाग लिया।

आगामी कार्यक्रम

1 अक्टूबर शारदीय नवरात्रि की महापूर्णाहूति

5 अक्टूबर विशेष भोजन

20 अक्टूबर दीपावली

प्रत्येक रविवार व्यक्तित्व परिष्कार सत्र

उत्सव-मास

त्यौहारों का महीना अक्टूबर, उत्सव का महीना अक्टूबर
आओ हम सारे उत्सव मनाएँ, स्वयं को, जग को करें आनन्दित ।।

आया दुर्गा पूजा जिसमें, माँ दुर्गा की होती वन्दना
सीख लें हम सब उनसे, साहस, शक्ति और पराक्रम का ।
दुर्गा के नव रूपों की भक्ति, हममें नवरस संचार करें
नयी कल्पना, नयी उमंग हो, नई भावनाओं से जग का श्रृँगार करें ।।

इसके बाद आएगी दीपावली, होगा जगमग जग तब सारा
दीपों के स्वर्णिम प्रकाश से, मिटेगा जग का तमस सारा ।
यह दीप होता प्रतीक हमारे, अन्तर के भी दीपक का
जो सतत प्रकाशित रहता, हमें जगाता, ब्रह्म संग बिठाता ।।

दीपावली के बाद होती है, पावन गोवर्धन पर्वत की पूजा
जो दिलाती याद हमें है, कैसे कृष्ण ने नंद गाँव बचाया ।
अपनी कानी उँगली पर विशाल गोवर्धन पर्वत उठाया
अहंकारी इन्द्र के प्रकोप से, सारे गोकुल को बचाया ।।

गोवर्धन के बाद भाई दूज की, परम्परा भारतवर्ष की है
भाई-बहन के अमिट प्रेम की कहानी, भाई दूज ही है ।
भाई के प्रेम को अमर बनाती, बहना अपने अमर प्रेम से
उसके लिए व्रत-उपवास रखकर, दीर्घायु की कामना करती हृदय से ।।

अब आता है छठ पर्व जो, बिहार का लोकप्रिय पर्व है
छठी मैया की पूजा-अर्चना का, चार दिनों का कठिन व्रत है ।
परिवार निर्माण की परम्परा का, होता निर्वहण जिसमें है
ऐसे छठ पर्व का महात्म्य, एक नहीं अनेकों में है ।।

भारत हमारा पर्वों का देश है, आनन्द के यह मार्ग ढूँढता
आनन्द मनाने का कोई भी क्षण हो, वह उसे विशेष बनाता ।
कोई न रहे यहाँ उदास, निराश, यही यहाँ की देव संस्कृति
आओ हम मन से सारे पर्व मनाकर, हरसाएँ अपनी देवसंस्कृति ।।

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे- यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	:	**गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)**
संपर्क सूत्र	:	**06478-228787, 9470454241**
Email	:	**gspsaharsa@gmail.com**
Website	:	**https://gsps.co.in/**
Social Connect	रू	**https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA**
		https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39
		https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en
		https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en
		https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/